

# राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता

स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः  
( महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित )

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री  
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा  
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्ता  
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी  
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

किं स सूर्यः प्रशंस्यो न, स्वल्पमादाय यो जलम् ।

ततोऽधिकं हि लोकाय, ददाति मधुरं मुदा ? ॥१३६॥

क्या वह सूर्य प्रशंसनीय नहीं है ? जो थोड़ा थोड़ा जल लेकर उससे ज्यादा लोगों को प्रसन्नता से मीठा जल देता है ।

Is that sun not admirable that when offered a little water happily gives sweet water to many people?

कीदृश्यपि भवेद् व्यक्तिः, सुकार्यं चेत् करोति सा ।

तर्हि सा धन्यवादार्हा, प्रोत्साह्या चाधिकाधिकम् ॥१३७॥

व्यक्ति कैसा भी हो, यदि वह अच्छा काम करता है तो वह धन्यवाद देने और अधिक से अधिक अच्छा काम करने के लिये प्रोत्साहित करने के योग्य है ।

Does not matter how the person is, if he is doing a good job. He should be thanked and praised to perform even more good work.

कुक्कुरो विन्दति स्वेष्टं, केवलं बुक्कनात् सदा ।

दुग्धं दत्ते न माताऽपि, शिशवे रोदनं विना ॥१३८॥

कुत्ता केवल भौंकने से ही सदा अपना अभीष्ट प्राप्त करता है । माता भी शिशु को रोये बिना दूध नहीं देती ।

A dog always gets desired thing by barking. A mother also never gives milk to the baby that is not crying.

कुत्सिता राजनीतिश्चेद्, धर्मं कं स्पृशति क्वचित् ।

तर्हि समग्रदेशं सा, विनाशयति निश्चितम् ॥१३९॥

यदि कुत्सित राजनीति किसी धर्म को कहीं छू लेती है, तो वह निश्चित रूप से सारे ही देश को विनष्ट कर देती है ।

If the mean/despicable politics touches some religion, it surely destroys the whole country.

कुबुद्धिं या समुन्मूल्य, सद्बुद्धिं सम्प्रयच्छति ।

त्रितापनाशने शक्ता, सैव शिक्षोत्तमा मता ॥१४०॥

जो कुबुद्धि को जड़ से उखाड़कर सद्बुद्धि प्रदान करती है और आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक इन तीनों तापों को नष्ट करने में समर्थ होती है, वही उत्तम शिक्षा है ।

That is the highest education that uproots a bad and creates a good intellect and destroys all three problems, physical, natural and mental.

कूपे सर्वत्र भङ्गा चेत्, पतिताऽस्ति बहुर्बहुः ।

तेनोन्मत्तो न कोऽपीट, वार्त्ता शृणोति कस्यचित् ॥१४१॥

सभी कुओं में यदि बहुत बहुत भाँग गिर गयी हो, तो उससे नशे में धुत हुआ कोई भी किसी की बात नहीं सुनता ।

If a whole lot of hemp/marijuana falls into the well then intoxicated by it nobody will listen to anybody. (This is the saying in India: When everybody in the same house have same nonsense opinion it is said that the marijuana is in your water.)

कृतघ्नो दुर्मतिर्दुष्टो, न कदापि सुखमेधते ।

उपकारी महान्सोऽस्ति, यस्तेन न विचाल्यते ॥१४२॥

कृतघ्न, दुर्मति और दुष्ट व्यक्ति कभी भी सुख से नहीं बढ़ता है । वह उपकारी महान् है जो उस कृतघ्न, दुर्मति और दुष्ट के आचरण से विचलित नहीं किया जाता ।

The ungrateful, bad minded and evil person can never be happy. That person is great that does not allow the be distracted/affected by such behaviour.

